आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012–2014

मासिक पत्रिका

# अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां अंक : आठवां दिसम्बर–2013

## गुफा दर्शनों से पहले संदेश

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को संदेश 4

## नाम की महिमा

6

(गुरु नानकदेव जी की बानी)

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज 25 आर.बी (राजस्थान)

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71
098 71 50 19 99

उप संपादक
नन्दनी / माया रानी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04

संपादकीय सहयोगी
सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

**स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक :** प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

**प्रकाशन दिनांक 1 दिसम्बर2013** –141– **मूल्य – पाँच रुपये**

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

# गुफा दर्शनों से पहले एक संदेश

16 पी.एस.आश्रम (राजस्थान)

मैंने इस जगह अभ्यास किया था। बहुत से प्रेमियों को इस जगह के दर्शन करने का मौका मिला है। जब मैंने अभ्यास कर लिया था तो मेरा विचार था कि मैं इस जगह को समाप्त कर दूं।

पश्चिम के कई बुजुर्ग प्रेमियों ने अपना जातिय तजुर्बा बताया कि उनका 'शब्द' पाँच-दस साल से बंद था लेकिन जब उन्होंने इस

तख्त पर माथा टेका तो उनका 'शब्द' खुल गया। मैंने उनकी अर्ज सुनकर ही इस जगह को कायम रखा हुआ है।

यह सच्चाई हैं कि जहाँ कोई इत्तर वाला बैठकर कुछ समय लगाता है वहाँ उस समय तक सुगन्धी रहती है जब तक लोग वहाँ गंद नहीं फैंकते। जब लोग गंद फैंकना शुरू कर देते हैं तो धीरे-धीरे वह सुगंधी समाप्त हो जाती है। सन्त सब कुछ देने के लिए तैयार रहते हैं लेकिन कद्र के बिना कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता।

प्रेमियों ने महाराज सावन सिंह जी से कहा कि आपके लिए नया मकान बनाना है। जिस जगह बाबा जयमल सिंह जी का छोटा सा मकान था, उस मकान के सारे मलबे का चबूतरा बनाकर उसके ऊपर नया मकान बना दिया। उन्हें कद्र थी कि यहाँ बैठकर बाबा जयमल सिंह जी ने अभ्यास किया था।

महापुरुषों के जाने के बाद हम उस जगह पर इतना गंद फैंक देते हैं कि लोग वहाँ जाकर शान्ति ढूंढते हैं लेकिन बाद में उन बेचारों को वहाँ क्या मिलता है? आपको पता है कि जो कमाई करता है वह मन के साथ संघर्ष करता है, वह संघर्ष करके ही कामयाब होता है।

अब आपने वहाँ श्रद्धा प्यार से जाना है। बहुत सी लड़कियां वहाँ जाकर रोना शुरू कर देती हैं जोकि अच्छा नहीं। आप लोग वहाँ माथा टेककर वापिस आएं। पहले बच्चों वाली बीबीयां जाएंगी ताकि उन्हें अंदर ज्यादा देर खड़े होकर सघर्ष न करना पड़े। जब बीबीयां यहाँ आ जाएंगी तो मर्द जाएंगें, मर्द उतनी देर यहाँ बैठकर सिमरन करें।

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# नाम की महिमा

गुरु नानकदेव जी की बानी

25 आर. बी. (राजस्थान)

नाम की महिमा अपरम्पार, जावां सतगुरु के बलिहार, (2)

1. पलक झपकते कट जाते हैं, उसके कष्ट कलेश,
जिसके मन मंदिर में रहते, सतगुरु जी हमेश, (2)
और नाम से बड़ा नहीं है, कोई भी आधार,
नाम की महिमा .....

2. नाम जपा कबीर नानक ने, जग में किया उजाला,
लेकर प्रभु का नाम पी गई, मीरा जहर प्याला, (2)
नित नियम से करो नाम से, जीवन का श्रृंगार,
नाम की महिमा .....

3. प्रभु से बेमुख रहा जो कोई, उसने जन्म गंवाया,
उसका जीवन सफल हो गया, जिसने नाम ध्याया, (2)
जो भी चढ़ा नाम की नईया, उतर गया भव पार,
नाम की महिमा .....

4. नाम की महिमा नाम ही जाने, यां जिस नाम ध्याया,
'अजायब' कृपाल के चरनी लग के, कोटि–कोटि यश गाया, (2)
जो भी द्वारे आया गुर के, उसका बेड़ा पार,
नाम की महिमा .....

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया भक्ति का दान दिया है और अपना यश करने का मौका दिया है।

जैसे गुरमेल सिंह ने भजन में बोला है कि जिसने नाम जपा है वही **नाम की महिमा** को जानता है। अमेरिका की कहावत है जब तक हम किसी पेड़ का फल नहीं खा लेते तब तक हमें उसके जायके का मिठास का पता नहीं लगता कि इस पेड़ के अंदर क्या खूबी है। हम जब तक नाम नहीं जपते, नाम के साथ नहीं जुड़ते तब तक चाहे हम सारी जिंदगी किसी भी सन्त-सतगुरु की बानी पढ़ते रहें हमें पता नहीं लगता कि हम क्या पढ़ रहे हैं?

गीता, भागवत, चारों पुराण और हिन्दुओं के खटशास्त्रों में भी सतगुरु और नाम का जिक्र है। इसी तरह हमारे गुरु साहिबानों ने हमें समझाने के लिए गुरु ग्रन्थ साहब लिखकर बड़ा परोपकार किया। महात्मा अपनी जिंदगी का बहुत कीमती समय लगाकर लेखनियां लिखते हैं। महात्मा लेखनियां लिखकर पैसे नहीं कमाते और न ही हम पर कोई अहसान करते हैं। महात्माओं ने परोपकार के लिए हर ग्रन्थ के अंदर **नाम की महिमा** गाई है।

सन्त कहते हैं कि चौरासी लाख योनियाँ भुगतने के बाद इंसानी जामा मिलता है, यह बड़ा उत्तम जामा है। वेदों-शास्त्रों ने इंसानी जामें की महिमा गाई है। हम सोचते हैं! देवी-देवता हमसे ऊँचे हैं लेकिन देवी-देवता भी इंसानी जामें के लिए तरसते हैं।

हमें इस कीमती इंसानी जामें में क्या करना चाहिए? हम इस जामें को विषय-विकारों, शराबों-कबाबों और मान-बड़ाई में खराब न करें। आप देखें! पक्षियों और जानवरों के भी बच्चे-बच्चियां हैं, वे भी सोते हैं और इंसान भी सोते हैं। गर्मी-सर्दी पशु-पक्षियों और इंसानों को भी लगती है। भूख-प्यास पशु-पक्षियों को भी लगती है लेकिन ये भोग योनियां हैं। पशु-पक्षी परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकते उन्हें यह मौका ही नहीं दिया गया क्योंकि उनमें बुद्धि ही नहीं रखी गई और न ही देवी-देवताओं को यह मौका है। यह मौका सिर्फ इंसानी जामें को ही है।

परमात्मा अगम, अलख, अगोचर है। हम उसकी गमता को नहीं समझ सकते। पहले माता बच्चे के अंदर अपना प्यार पैदा करती है। बच्चा नहीं जानता कि कौन मेरी माता है, कौन मेरा पिता है, कौन मेरी बहन और कौन मेरा भाई है? बच्चा नहीं जानता कि किस तरह खाना खाना है, किस तरह संसार में रहना है? हमें यह सारी जानकारी माता से ही मिलती है।

माता बड़े प्यार से बच्चे की आँखों में आँखें डालकर अपनी बेजुबानी जुबान से बोल-बोलकर बताती है। जब बच्चा माता के कहने पर टूटा-फूटा वचन बोल लेता है तो माता की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता। इसी तरह दरगाह में जिनका फैसला हो जाता है परमात्मा उन पर तरस करता है उनका मिलाप किसी महात्मा से करवाता है। हम शब्द बोलते हैं:

*जी निरगुण हारे कोई गुण नाहीं, जी आपै तरस पेयोई।*
*जी तरस पया मैं रहमत होई जी सतगुरु साजन मिलया।।*

जब हमें महात्मा मिल जाते हैं तो वह कहते हैं, ''न आप अपना समाज बदलें, न घर-बार छोड़कर जंगलों-पहाड़ों में चले जाएं न मन्दिरों गुरुद्वारों में बैठ जाएं बल्कि वह कहते हैं कि आपको कर्मों के मुताबिक जो परिवार, पत्नी, बच्चे और जिम्मेवारियां मिली हैं उन्हें निभाएं। अपने दस नाखूनों से मेहनत करके परिवार में रहते हुए परमात्मा की भक्ति करें।''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हम नहीं जानते कि हमने किसकी भक्ति करनी है?'' सन्त कहते हैं, ''देखो प्यारेयो! आप जिसकी भक्ति करेंगे आपको उस जामें में जाना पड़ेगा। पत्थर को पूजेंगे तो पत्थर बनेंगे, लकड़ी को पूजेंगे तो लकड़ी बनेंगे।''

*जहाँ आसा तहाँ वासा।*

आपका जैसा ईष्ट होगा आपको वैसा ही जामा मिलेगा। क्यों न हम उस अलख, अगम परमात्मा की भक्ति करें जिसका कोई रूप रंग रेख नहीं।

*सो स्वरूप संतन कथे विरले योगिश्वर।*

परमात्मा इंसान की इस कमजोरी को अच्छी तरह समझता है कि मैं अलख हूँ ये मुझे लख नहीं सकते इसलिए वह हमारी तरह इंसान बनकर आता है। देखने में तो वह हमारी तरह इंसान होता है लेकिन हम इंसानों से अलग होता है। आज आपके आगे गुरु नानकदेव जी की बानी रखी जाएगी अगर हम उस मालिक के प्यारे को समझ सकते तो लोग उन्हें कुराहिया क्यों कहते? उस समय के लोगों ने उन्हें अपने गाँव में नहीं आने दिया था कि यह लोगों की बुद्धि खराब करता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*चुप करां ता आखदे ये घट है नहीं मत।*
*काई गली न लंघे कित्थे कटा झट।*
*ओत्थे ऐथे नानका करता रखे पत।।*

आप कहते हैं, ''अगर मैं चुप रहता हूँ तो लोग कहते हैं कि यह कुछ नहीं जानता अगर बोलता हूँ तो कहते हैं कि यह बकवास कर रहा है अगर मैं चलता-फिरता हूँ तो कहते हैं कि ये धूल उड़ाता फिरता है। कोई ऐसी जगह है जहाँ मैं थोड़ा समय बिता सकूँ! आप फिर कहते हैं कि जो लोग बकवास करते हैं उन्हें करने दें। आप अपनी भक्ति न छोड़े।''

परमात्मा हमारी तरह इंसान बनकर आता है अगर हम उसे समझ सकते तो उसके साथ बुरा सलूक न करते उससे फायदा उठाते। महात्मा हमें समझाते हैं कि आप परमात्मा की भक्ति करें। परमात्मा सच्चखंड में बैठा है, वह जन्म-मरण में नहीं आता। वह आदि-जुगादि से चला आ रहा है। वह सुते-सिद्ध प्रकाश है वह सबका अपना है, सबका पिता है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

*नौं दरवाजे काया कोट गढ़ दसवां गुप्त रखीजे।*
*बज्र किवाड़ न खुल्ली गुरु शब्द खुलीजे।।*

यह शरीर एक किला है। इसके नौं दरवाजे- दो आँखों के सुराख, दो कानों के सुराख, दो नाक के सुराख, मुँह और नीचे दो इन्द्रियों के सुराख बाहर संसार की तरफ खुलते हैं, इनके खट्टे-मीठे रस हैं लेकिन परमात्मा के घर की तरफ खुलने वाला दरवाजा गुप्त है। परमात्मा वहाँ बज्र किवाड़ लगाकर बैठा है। हम इस बज्र किवाड़ को पढ़-पढ़ाई से, पैसे के जोर से, हुकूमत के जोर से और कौम तबदील करके नहीं खोल सकते हैं। गुरु नानकदेव कहते हैंः

*गुरु कुंजी पाहू निवल मन कोठा तन छत।*
*नानक गुरु बिन मन का ताक न उगड़े अवर न कुंजी हथ।।*

आप किसी ऐसे सन्त के पास जाएं जिसे परमात्मा ने चाबी देकर भेजा है। वह जब तक चाबी नहीं लगाएगा हम इस किले के अंदर दाखिल नहीं हो सकते। वहाँ बैठा दाता दान कर रहा है।

सन्त कहते हैं कि वह परमात्मा बाहर के किसी साधन से नहीं मिलता वह आप सबके अंदर है, हमारी आत्मा उस परमात्मा की अंश है। परमात्मा आत्मा का पिता है। बीज के अंदर पेड़ है और पेड़ के अंदर बीज है। जो लोग परमात्मा को बाहर ढूंढते हैं वे बेकार ही अपना समय खराब करते हैं।

सब सन्तों की बानी यही होका देती है कि इंसान का जामा बहुत कीमती है, उत्तम है। इस जामें में परमात्मा ने अपने मिलने का अपनी भक्ति करने का मौका दिया है अगर हम इस जामे में परमात्मा की भक्ति नहीं करते तो फिर चौरासी लाख योनियों में चले जाते हैं। महात्मा ने **नाम की महिमा** पर जोर देकर कहा हैं कि संगत का हमारे ऊपर बहुत असर पड़ता है अगर हम शराबियों-कबाबियों के पास बैठेंगे तो हमारे अंदर शराब पीने की आदत पड़ जाएगी। चोरों के पास बैठेंगे तो चोरी करने की आदत पड़ जाएगी।

***जैसी संगत वैसी रंगत।***

अगर हम मालिक के प्यारेयो की संगत-सोहबत में जाएंगे तो हमारा भूला-भटका मन भी भक्ति करने लग जाएगा। आम कहावत है कि खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है हालाँकि इसके अंदर आत्मा नहीं होती, इंसान के अंदर तो आत्मा है। महात्मा की संगत में आकर बड़े-बड़े ऐब और चोरी करने वाले भूमिए और बिधिचन्द जैसे महात्मा बन गए। आपके आगे गुरु नानकदेव जी का शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनें:

## घर रहो रे मन मुगध इयाने।। राम जपो अंतरगत ध्याने।।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं, ''परमात्मा हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सबकी आँखों के पीछे पर्दा लगाकर बैठा हुआ है। यह चलती-फिरती दुनिया अपने आप नहीं बनी इसे कोई चला रहा है। यह परमात्मा के बनाए हुए विधान हैं कि किस तरह समय पर हवा बदलती है। सूरज, चन्द्रमा प्रकाश करते और उदय-अस्त होते हैं। इसी तरह हम अपनी आँखों से मौत-पैदाईश देखते हैं।''

जिस परमात्मा ने हमारी देह बनाई है उसने ताला लगाकर हमें आँखों के रास्ते बाहर निकाल दिया है। अब हम सोते-जागते, चलते-फिरते और पढ़ते-पढ़ाते भी बाहर हैं। हम न आज तक अंदर गए न हमने परमात्मा के दर्शन किए। आप अंदर जाकर राम के साथ लिव लगाएं, उस राम को जपें। गुरु साहब कहते हैं :

*राम राम सबको कहे कहया राम न होए ।*

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''तोता भी राम! राम! करता है लेकिन जब वह बाहर दूसरी संगत में चला जाता है तो वह भूल जाता है। हमारी भी राम! राम! करने की आदत है।''

*रमतीता सो राम।*

वह राम हर जगह रमा हुआ है, राम एक ताकत है। वह लिखने, पढ़ने, बोलने में नहीं आता। हमने उस राम से मिलना है जिसने दुनिया की रचना पैदा की है। सोचकर देखें! क्या मिश्री-मिश्री कहने से कभी मुँह मीठा हुआ? क्या रोटी-रोटी करने से कभी भूख मिटी? क्या पानी-पानी करने से कभी प्यास बुझी?

*बिन देखे बिन अरस-परस के नाम लिए क्या होए ।*
*धन दे कहे धनी जे होए ते निर्धन रहे न कोए ।।*

अगर पौंड-पौंड करने से कोई साहूकार हो जाए तो हमें दिन-रात मेहनत करने की, खेती करने की, कारखाने चलाने की क्या जरूरत है? अगर राम! राम!, अल्लाह! अल्लाह!, वाहेगुरु! वाहेगुरु! कहने से परमात्मा मिलता तो सबको मिल जाना चाहिए था, सबको शान्ति आ जानी चाहिए थी लेकिन हमारे अंदर मतभेद हैं हम एक-दूसरे के खिलाफ बोलते हैं कि मेरी कौम अच्छी है उसकी ठीक नहीं क्योंकि हमने उस राम को अपने अंदर प्रकट नहीं किया; हम उस राम के साथ जुडे नहीं। अगर हमें यह पता लग जाए कि राम सबके अंदर है वह सबका दाता है तो क्या हम किसी को बुरा कहेंगे? गुरु नानक साहब कहते हैं कि हे प्यारेया! तू बाहर से ख्याल निकालकर अंदर आ जहाँ वह परमात्मा बैठा है।

**लालच छोड रचो अपरंपर इयों पावो मुकत दुआरा हे।।**

हमें पता है कि हर बात के नियम होते हैं। जब हम डॉक्टर के पास जाते हैं तो वह हमारी बीमारी देखता है फिर हमें अपनी लियाकत के मुताबिक दवाई के साथ कुछ परहेज़ भी बताता है। जो लोग डॉक्टर के कहे मुताबिक दवाई खाते हैं और परहेज़ करते हैं वे तंदरूस्ती हासिल कर लेते हैं; जो लोग दवाई लाकर अलमारी में रख देते हैं उनकी बीमारी कैसे दूर होगी?

इसी तरह जब हम सन्त-महात्माओं के पास जाते हैं वे भी सबसे पहले हमारी नब्ज़ देखते हैं। सन्त पूछते हैं, ''क्यों भई! क्या शराब पीता है, जुआ खेलता है, मीट खाता है, किसी की जिन्दगी लेता है, अपनी रोजी-रोटी कमाकर खाता है?'' अगर हमारे अंदर ये ऐब हैं तो सन्त कहते हैं कि इन ऐबों को छोड़कर हमारे पास आना। जो लोग सच्चे दिल से ये ऐब छोड़ देते हैं सन्त उन्हें नाम का साधन बताते हैं, ध्यान बताते हैं।

जो लोग सन्तों के कहे मुताबिक 'नामदान' जपते हैं वे जिन्दगी में अपनी तरक्की देख लेते हैं। जो लोग डॉक्टर से दवाई लाकर अलमारी में रख देते हैं वे डॉक्टर को बुरा-भला कहते हैं। इसमें डॉक्टर का क्या कसूर है? इसी तरह जो लोग 'नामदान' लेकर अपने आपको नहीं सुधारते इसमें गुरु का क्या कसूर है?

*गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक।*
*अन्धे एक न लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूँक।।*

गुरु साहब कहते हैं कि सबसे पहले लालच छोड़ें। दूसरे के हक़ पर कब्ज़ा करना लालच है। हर जीव अपने कर्मों की खेती खाने के लिए आया है। लालची आदमी कभी भक्ति की तरफ नहीं आ सकता। लालची आदमी एक माँस के लोथड़े से ज्यादा नहीं होता, वह अपने मतलब का ही होता है। हम लालच छोड़कर परमात्मा के साथ जुड़ें।

*लोभी दा वसाह न कीजे, जे का पार वसाय।*
*अंत काल थिथे थोहे, जित्थे हथ न पाय।।*

**जिस बिसरिऐ जम जोहण लागै।। सभ सुख जाहें दुखा फुन आगै।**

गुरु नानक साहब प्यार से कहते हैं, ''परमात्मा को, नाम को बिसरने पर यम हमें इस तरह देखते हैं जिस तरह बिल्ली चूहे को देखती है कि किस वक्त इसे झपट्टा मारूँ?''

जो परमात्मा की भक्ति नहीं करते शराबो-कबाबों में लग जाते हैं वहाँ से सुख चले जाते हैं और दुख आकर घर कर लेते हैं। मौत के वक्त यम आता है गर्दन पकड़कर ले जाता है अगर हम यहाँ नाजायज कत्लोगारत करते हैं चोरियां-डाके मारते हैं तो इस दुनिया का कानून भी हमें माफ नहीं करता पुलिस पकड़ लेती है।

**राम नाम जप गुरमुख जीअड़े एह परम तत्त वीचारा हे।।**

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''हमारे विचार में आया है कि आप सन्त-महात्माओं से मिलें। वे आपको शरीर के अंदर जाने का साधन बताते हैं कि कहाँ ध्यान लगाना है, आप वैसा करें।''

**हर हर नाम जपो रस मीठा, गुरमुख हर रस अंतर डीठा।।**

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सन्त-महात्मा हमें सुनी सुनाई बातें नहीं बताते। उन्होंने अपनी जिन्दगी में जो तजुर्बा किया होता है वही बताते हैं। जैसे सूरज, चंद्रमा, सितारे हमें मुफ्त में प्रकाश देते हैं किसी से अफजाना नहीं माँगते इसी तरह महात्मा भी अपनी तालीम की फीस नहीं लगाते, मुफ्त बाँटते हैं। उनकी नेक सलाह हमारी जिन्दगी को पलट देती है।'' कबीर साहब कहते हैंः

*नाम रतन धन कोठरी खान खुली घट माहे।*
*सेत मेत ही देत हूँ ग्राहक कोई नाहे।।*

महात्मा कहते है कि हमारे अंदर नाम की खान खुली हुई है। हम यह नाम मुफ्त देते हैं फिर भी कोई इस चीज़ का ग्राहक नहीं किसके कर्म लेकर आए! किस्मत नहीं। नाम का रस इतना मीठा और स्वादिष्ट है फिर दुनिया के रस अपने आप ही फीके हो जाते हैं। गुरुमुख इस रस को पीते हैं और हमें पीने की युक्ति बताते हैं।

हमारी आत्मा पर तीन पर्दे- स्थूल, सूक्ष्म और कारण है। जब हम आँखों के पीछे आते हैं तो स्थूल पर्दा उतर जाता है। ब्रह्म में जाकर कारण पर्दा उतर जाता है। जब हम दसवें द्वार पारब्रह्म में जाते हैं तो आत्मा से सारे पर्दे उतर जाते हैं। परम सन्त हमें नाम के साथ जोड़ते हैं। उस जगह अगर हम बाहर हैं तो गुरु हमें बाहर देह में बैठकर समझाता है कि यह गलतियाँ छोड़ो तो ही अंदर जा

सकते हो। रोज नाम की कमाई करो तो ही परमात्मा दरवाजा खोलेगा। गुरु बाहर सतसंग के जरिए हमारी गलतियाँ बताते हैं।

जब हम स्थूल पर्दा उतारते हैं सूक्ष्म में जाते हैं वहाँ गुरु सूक्ष्म रूप धारता है। ब्रह्म में जाते है तो गुरु ब्रह्म रूप है। कारण में जाते हैं तो गुरु कारण रूप है, पारब्रह्म में जाते हैं तो गुरु पारबह्म रूप, शब्द रूप है। हम जैसे-जैसे ऊपर जाते हैं वह वैसे-वैसे अपना रूप बदलता है। इसलिए आप प्यार से कहते हैं कि प्यारेयो! जब दसवें द्वार पारब्रह्म में जाते हैं तो आत्मा नंगी हो जाती है फिर इसे पता लगता है कि मेरा भी कोई परमात्मा है।

*अमृत रस सतगुरु चुवाया, दसवें द्वार प्रकट होए आया।*

जब हम सूरज, चंद्रमा, सितारे पार करके सतगुरु के स्वरूप तक पहुँचते हैं तो असली शिष्य बन जाते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''नाम कोई लफ्ज़ नहीं अगर नाम लफ्ज़ हो तो पाँच साल की लड़की भी समझा सकती है। नाम जिम्मेवारी है।'' नाम मीठा रस है सन्त इस रस को पीते हैं और हमें भी इस रस को पीने की युक्ति ही नहीं बताते बल्कि हमारी मदद भी करते हैं।

हमें शराबो-कबाबों, विषय-विकारों के रस मीठे लगते हैं हम इन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं। हम जैसे-जैसे नाम की कमाई करते हैं वैसे-वैसे मालिक के नज़दीक होते जाते हैं, हमारे अंदर भक्ति जमा होती जाती है। हम जैसे-जैसे पहाड़ के नजदीक जाएँगे सर्दी बढ़ती जाएगी इसी तरह हम दुनिया के रसों को छोड़कर एक दिन नाम का रस पीने लग जाते हैं।

**अहनिस राम रहो रंग राते एह जप-तप संजम सारा हे ।।**

हाथी के पाँव में सबका पाँव। आप दिन-रात, सोते-जागते उस राम के रस में रंगे रहो। नाम आपकी जुबान पर चढ़ा रहे। सोते-

जागते, उठते-बैठते कभी भी आपका सिमरन न टूटे। आप देखें! हम जिसे याद करते हैं रात को भी उसी के स्वपन आते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

*सपने हूं बरड़ाएके जे मुख निकसे राम।*
*ताके पग की पनही मेरे तन को चाम ।।*

आप कहते हैं अगर कोई सपने में बड़बड़ाकर भी परमात्मा को याद करता है तो मैं उसे अपने तन की जूतियाँ बनाकर पहनाने को तैयार हूँ क्योंकि वह बहुत बड़ा भक्त है, मालिक का रूप हो चुका है। हम सिमरन नहीं करते रात को डरावने, बुरे सपने आते हैं। हम सपने में भी कहते हैं मारो, पकड़ो।

**राम नाम गुरबचनी बोलो, संत सभा मह एह रस टोलो।।**

गुरु नानक साहब जी की बानी इस किस्म की लिखी हुई है अगर हम एक तुक को सही नहीं पढ़ेगे तो हम आगे नहीं चल पाएँगे। आप कहते हैं, ''दिन-रात उस मालिक की भक्ति करो उस राम को जपो जो रमतीता है वह सबमें रमा हुआ है। आपने वह राम बोलना है जिसे सन्तों ने प्रकट किया है अगर आपको इस नाम के रस की जरूरत है और आप अपना जीवन सफल करना चाहते हैं तो आप इस रस को सन्तों की सभा में ढूंढे। सन्तों की सभा पूर्वले कर्मों के बगैर नहीं मिलती।''

*सन्त सभा ओट गुरु पूरे, धुर मस्तक लेख लखाए।*
*जन नानक कन्त रंगीला पाया,फेर दुख न लगे आए।।*

धुर दरगाह से मालिक कृपा करे तो ही हम सन्तों की सभा में जाते हैं और उनकी बताई हुई भक्ति करते हैं। उस रंगीले का रंग कभी नहीं उतरता वह हमारी आत्मा का कन्त है, हमारी आत्मा का परमात्मा है। फिर हम जन्म-मरण के दुख से बच जाते

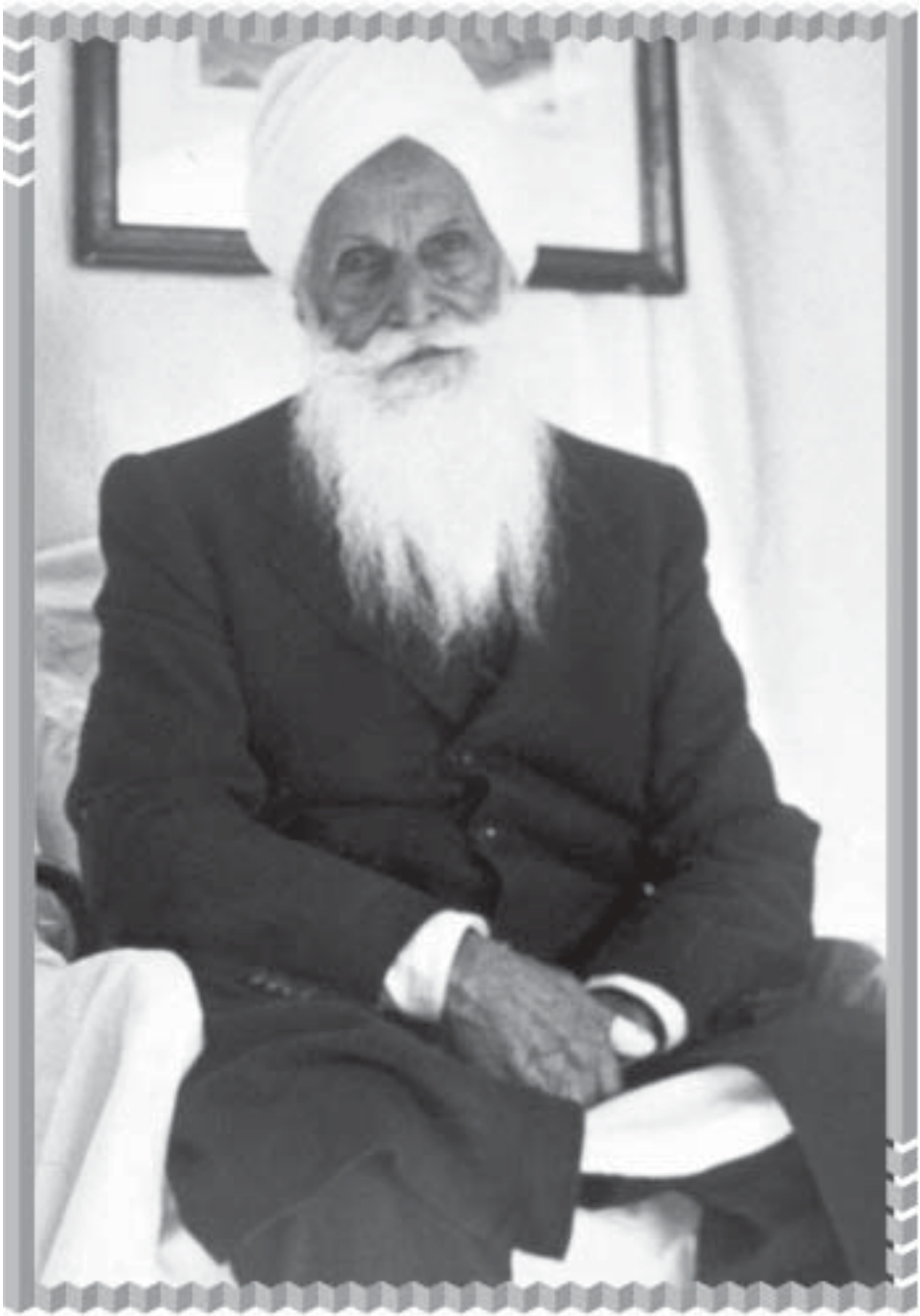

हैं। सन्तों की सभा में किसी की निन्दा-चुगली नहीं होती और न हमें एक-दूसरे से अलग करने वाले भाषण सुनाए जाते हैं।

**गुरमत खोज लहो घर अपना, बहुड़ न गरभ मंझारा हे।।**

आप कहते हैं कि हम बाहर ही बाहर रहते हैं अपने घर के अंदर नहीं आए। आप गुरुमुखों को मिलें जिन्होंने घर के अंदर दाखिल होकर परमात्मा को प्राप्त किया है। गुरुमुख आपको बताएंगे कि किस तरह घर के अंदर आना है। हम मुँह में निवाला डालते हैं लेकिन हमें यह इल्म नहीं कि वह किस तरफ चला गया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि बहुत से डॉक्टर यह कहते हैं कि हमने बहुत चीर फाड़ किए हैं हमें अंदर कोई खण्ड-ब्रह्माण्ड नहीं मिला। महाराज जी ने बताया कि यह डॉक्टरो का कसूर नहीं। डॉक्टर मेटिरियल-जड़ चीज़ को चीरते हैं लेकिन यह जड़ नहीं; यह सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है।

रेडियो, टेलिविजन के अंदर साज बजते हैं, औरतें-मर्द गाते हैं अगर कोई आदमी यह सोचे कि मुझे शादी करवाने की क्या जरूरत है मैं इसी सेट में से एक औरत निकाल लूँगा जो मेरा सारा काम कर देगी। अगर कोई औरत यह सोचे कि मैं इसमें से एक मर्द निकाल लूँगी तो मुझे किसी की आधीनगी करने की क्या जरूरत है? चाहे हम सेट को तोड़ दें उसमें से न कोई औरत निकलेगी न कोई मर्द निकलेगा और न ही कोई साज बजेंगे। किस तरह इंजिनियरों ने जगह-जगह पर पुर्जे, बल्ब, तारें फिट की हुई हैं जिससे सारा कुछ ही दिखने और बजने लग जाता है।

इसी तरह यह शरीर उस कलाकार इंजिनियर परमात्मा का बनाया हुआ है। उसने इसके अंदर हाथ, पैर, कान, नाक, आवाज

सब कुछ ही फिट किया हुआ है इसे भी करन्ट ताकत की जरूरत पड़ती है। हाथ, कान, नाक, आवाज सब कुछ ही होता है लेकिन जब हमारे अंदर करंट आत्मा नहीं रहती तो ये सब बेकार हो जाते हैं; हाथ, पैर, आँखें हरकत नहीं करते। गुरुमुख लोगों ने इस सेट का अध्ययन किया है हमने उनके तजुर्बे से फायदा उठाना है।

सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है। पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। जो खुद नहीं पढ़ा वह दूसरों को क्या पढ़ाएगा? इसी तरह जो खुद अन्धे हैं कभी अंदर नहीं गए वे किसी को भक्ति करने का या इस सेट में दाखिल होने का क्या तरीका बताएँगे?'' गुरु नानक साहब कहते हैंः

*गुरु जिन्हां दा अन्धला सिख भी अन्धे कर्म करेण ।*
*ओ चलन भाणे अपने नित झूठो झूठ बुलेण।।*

जो खुद अन्धे हैं वे दूसरों को क्या सुजाखा बनाएँगे? यह जिंदगी का सवाल है। जब औरत बच्चे को जन्म देती है तो उसकी और बच्चे की क्या हालत होती है? यह कोई छोटी सी तकलीफ नहीं। जब इंसान मरता है उस समय परिवार के लोग नजदीक बैठे होते हैं। कोई उसके मुँह में पानी डाल दे तो यह उसकी मेहरबानी है। उस समय हम कुछ करने लायक नहीं होते। परिवार के लोग उससे पूछते हैं कहीं कुछ रखा हुआ है तो बता दे, कोई वसीयत करा दे। उसकी जान पर बनी होती है कभी किसी ने पूछा कि इस समय तेरे साथ अंदर क्या बीत रही है? वे लोग अपने मतलब की खातिर आराम से मरने भी नहीं देते। कबीर साहब कहते हैंः

*कौडी-कौडी जोड़के जोड़या लख करोड़, मरती वरया रे नरा लई लंगोटी तोड़।*

**सच तीरथ नावो हर गुण गावो, तत वीचारो हर लिव लावो।।**

बाहर ऐसा कोई तीर्थ नहीं जो हमारे पापों की मैल उतार दे। तालाब, नहर, दरिया, समुद्र सब बदन की मैल ही उतारते हैं। पापों की मैल उतारने वाला तीर्थ सच तीर्थ है। सच का मतलब जो कभी नाश न हो, यह पारब्रह्म में जाकर मिलता है। जब आत्मा स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में जाती है तो नेह कर्म हो जाती है।

**अन्त काल जम जोह न साकै हर बोलो राम प्यारा हे।।**

अगर आप परमात्मा की भक्ति करते हैं उस 'नाम' को याद करते हैं तो अन्त समय यमदूत नहीं आएंगे गुरु ही आएगा। प्रेमियों के घरों में मौत होती है, जो लोग कमाई करते हैं वे कई-कई दिन पहले ही बता देते हैं अगर कोई पास बैठा हो तो वह शान्ति से चोला छोड़ देता है कुछ नहीं बोलता। अगर अन्त समय में गुरु ने संभाल नहीं करनी तो ऐसे गुरु के पास जाने का क्या फायदा? अगर शिष्य गुरु का कहना नहीं मानता अपने जीवन को पवित्र नहीं रखता तो गुरु का क्या कसूर है? गुरु ने कोई कर्ज तो नहीं लिया कि वह आए और हम बुरे कर्म न छोड़े।

प्यारे बच्चो! अन्त समय में माता, बहन, भाई, दोस्त, दौलत कोई भी साथ नहीं जाता। बियाबान जंगल है डाकू कत्ल करने के लिए खड़े हैं अगर वहाँ कोई अपना आदमी मिल जाए तो कितनी खुशी होती है। उसी तरह उस वक्त आपका सच्चा मित्र गुरु आ जाता है तो आत्मा को खुशी होती है। हमने सारी जिन्दगी दुनिया खाई, दुनिया पी और दुनिया के साथ जुड़े रहे तो अन्त समय कौन आएगा? अगर भक्ति करते हैं तो हमें इन्तजार नहीं करनी पड़ती।

*सज्जन से ही आखिए जो चलदेया नाल चलन।*
*जित्थे लेखा मँगिए तित्थे खड़े दसन।।*

पक्के विश्वास की बात यह है कि गुरु अपने सेवक को उस रास्ते ही नहीं जाने देता, सतसंगी का रास्ता ही अलग है। गुरु नानकदेव जी की एक आत्मा नर्क में चली गई। गुरु नानकदेव जी ने अपना अँगूठा नर्क में डुबोया सारा नर्क खाली कर दिया।

अगर शाह की कोई आसामी कर्ज लेकर कलकत्ता, बॉम्बे किसी भी जगह चली जाए तो शाह अपना कर्ज लेने वहाँ भी चला जाता है। तुलसी साहब की बानी में आता है कि सन्त जिसके ऊपर अपनी मोहर-छाप लगा देते हैं उसे नहीं छोड़ते।

प्यारेयो! जिसने आपकी मदद करनी है आप उसका कहना मानें, उसके साथ प्यार करें। हमारे भाई-बहन, यार-दोस्त, रिश्तेदार सब मीठे ठग हैं। जितने दिन इनका मतलब पूरा होता है उतने दिन इनमें बड़ा जोश होता है ये हमारे साथ बहुत प्यार करते हैं। जब हमसे कोई मतलब पूरा नहीं होता तो इनका जोश ठंडा पड़ जाता है। अगर कोई किसी अच्छे औहदे पर है तो हम कहते हैं कि यह हमारा रिश्तेदार है बेशक वह हमारी जाति का भी न हो।

**सतगुरु पुरख दाता वडदाणा, जिस अंतर साच सो शबद समाणा।।**

सतगुरु संसार में दाता बनकर आता है, भिखारी बनकर नहीं आता। वह समझदार होता है। वह हमें परमात्मा की भक्ति करना बताता है जो हमारे साथ जाए। सन्त हमें नाम की दात देते हैं, **नाम की महिमा** बताते हैं जिसे हम धन-दौलत से नहीं खरीद सकते। इस दात को न चोर चुरा सकता है, न अग्नि जला सकती है और न पानी डुबो सकता है; यह दात जीव के साथ जाती है।

**जिस कौ सतगुरु मेल मिलाए तिस चूका जम भै भारा हे।।**

आप ठोस विश्वास से कहते हैं सतगुरु जिसे नाम के साथ जोड़ देते है उसका दुनिया में आने-जाने का चक्कर खत्म हो जाता है।

**पंच तत्त मिल काया कीनी, तिस मह् राम रतन लै चीनी।।**

गुरु नानक साहब कहते हैं यह वजूद पाँच तत्व-हवा, आग, मिट्टी, पानी और आकाश का बना है। इसे कंट्रोल करने वाली कीमती चीज़ परमात्मा की अंश आत्मा है। जब परमात्मा अपनी अंश आत्मा को उठा लेता है तो मिट्टी मिट्टी में मिल जाती है, पानी पानी में मिल जाता है, हवा हवा में मिल जाती है, आकाश आकाश में मिल जाता है और यह शरीर ढह-ढेरी हो जाता है। सन्त उस कीमती चीज़ आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए आते हैं।

**आतम राम राम है आतम हर पाईऐ शब्द वीचारा हे।।**

आप कहते हैं कि सबसे पहले हमने अपनी पहचान करनी है। आत्मा ही परमात्मा है। जैसे बूँद भी पानी है और समुद्र भी पानी है फर्क सिर्फ विछोड़े का है। इसी तरह आत्मा, समुद्र परमात्मा से बिछुड़ी हुई है। जब हम महात्मा के बताए हुए सिमरन के मुताबिक फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे ले आते हैं तो उस कण-कण में व्यापक शब्द के साथ जुड़ जाते हैं। स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में जाकर अपनी पहचान कर लेते हैं। वहाँ पता लगता है कि मैं आत्मा हूँ। वहाँ कोई लिंग-भेद नहीं होता कि मैं औरत हूँ या मर्द हूँ। वहाँ अमेरिकन, हिन्दुस्तानी, हिन्दू या मुसलमान का सवाल नहीं।

आप सचखण्ड पहुँचे हुए महात्मा की बानी पढ़कर देखें! उनका सबके साथ प्यार होता है। वे जाति का भेदभाव नहीं रखते, सारी कायनात को अपना घर समझते हैं। रहम करने वाले को रहीम कहा है। आत्मा को आराम देने वाले को राम कहा है। गिरे हुए को उठाने वाले को गिरधारी कहा है। यह हमारे लफ्जों का चक्कर है। ऐसे महात्मा उस ताकत का जिक्र करते हैं और हमें उस ताकत के

साथ जोड़ते हैं जो हर एक के अंदर व्यापक है क्योंकि परमात्मा हमारे अंदर जोत रूप, नाद रूप होकर विराजमान है।

अगर हम शाम के समय बाहर सैर के लिए निकलें आँधी आ जाए तो हम वहीं रूक जाते हैं। तब हम किसी आवाज को सुनने की, रोशनी देखने की कोशिश करते हैं। अब रात का वक्त है रास्ता ऊँचा नीचा है, झाड़ियाँ हैं अगर हमारे हाथ में टार्च हो हम आसानी से अपनी मंजिल तक पहुँच जाएँगे। इसी तरह हम भी अपने घर सचखण्ड से भूले हुए हैं। परमात्मा ने हमारे अंदर आवाज रखी हुई है जिसको हिन्दु महात्मा नाद, आकाशबाणी कहते हैं। मुसलमान इसे कलमा, बाँगे असमानी कहते हैं। गुरु नानकदेव जी ने इसे रब्बी बानी, धुर की बानी, अमर हुक्म कहा है।

सब सन्तों ने इस दुनिया को अन्धा कुँआ कहकर ब्यान किया है। हम इस अन्धे कुएँ में गिरे हुए हैं। न हम देख सकते हैं न बाहर निकल सकते हैं। जब हम महात्मा के चरणों में जाते हैं तो वह हमारे अंदर कर्मों के मुताबिक नाम का दीपक रख देते हैं, शब्द की डोरी के साथ जोड़ देते हैं। परमात्मा ने विद्या की ताकत हर एक के अंदर पहले से ही रखी है। जो उस्तादों के पास जाते हैं वे इस सोई हुई विद्या को जगा लेते हैं। गुरु साहब कहते हैंः

*शरीरों भालण को बाहर जाए, नाम न ले बहुत बेगार दुख पाए।*

शायद दिल में ख्याल हो कि हम बहुत से ग्रन्थ पढ़कर परमात्मा को पा लेंगे! कबीर साहब कहते हैंः

*दिन सो रैन वेद नहीं शास्त्र जहाँ बसे निरंकारा।*

जहाँ परमात्मा रहता हैं वहाँ न दिन है, न रात है, न कोई वेद है न शास्त्र है, न किसी भाषा का लफ्ज़ है।

**सत संतोख रहो जन भाई ।। खिमा गहो सतगुर सरणाई ।।**

गुरु नानक साहब कहते हैं कि आप सत संतोष लेकर शराब-कबाब छोड़कर सतगुरु की शरण में जाएं। कोई कहता है कि मेरी बीमारी दूर हो जाए, कोई कहता है कि मेरी बेरोजगारी दूर हो जाए, कोई कहता हैं कि मेरा कर्ज उतर जाए। क्या यह मालिक की भक्ति है? हम सन्तों के पास अपनी जरूरतों के लिए जाते हैं। सन्तों की दुकान पर नाम है, भक्ति है। जो आपके कर्मों में है वह आपको भोगना ही है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर लैंप के कलपुर्जे ठीक हैं उसमें तेल भी है तो सिर्फ माचिस लगाने की जरूरत है।'' अगर ऐसा जीव सन्तों के पास जाता है फिर देखें! उस पर क्या रंग चढ़ता है? हमारे कलपुर्जे ठीक नहीं लैम्प में तेल, बत्ती भी नहीं तो उसे तैयार करने में कितना समय लगेगा? हमारी भी वही हालत है हम काम, क्रोध और दुनिया की ख्वाहिशों से नहीं हटते।

**आतम चीन परातम चीनों गुर संगत एह निसतारा हे ।।**

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि संगत में जाकर फैसला हो जाता है कि नाम की कमाई ही हमारे काम आएगी। जिस गुरु ने हमें नाम के साथ जोड़ा है आखिर उसी ने हमारे काम आना है। दुनिया की वस्तुएँ माँगी मिल गई। बच्चा माँगा मिल गया अगर बच्चा मालिक को प्यारा हो गया तो रोते-पीटते फिरते हैं। पति माँगा मिल गया, वह साथ छोड़ गया औरत बिलखती फिरती है। पत्नी माँगी वह साथ छोड़ गई तो मर्द बिलखता फिरता है। धन-दौलत माँगा मिल गया अगर उसे कोई चुराकर ले गया या कोई सज्जन लेकर मुकर जाता है तो रोते-पीटते फिरते हैं।

परमात्मा देता-देता नहीं थकता। अब हम जो माँग रहे हैं उसे खाने के लिए फिर यहाँ आ जाएँगे। आप देख लें! ऐसे ही एक दूसरे को चिकने-चुपड़े नजर आते हैं, उसे एक तरफ ले जाकर पूछें तो आपको पता लगेगा कि इसके जितना कोई दुखी नहीं। यहाँ दुखों का कोई अंत नहीं। कबीर साहब कहते हैंः

*ना सुख विद्या के पढ़े।*

न विद्या पढ़ने में सुख है न विद्या पढ़ाने में सुख है। किसी महात्मा की शरण में जाकर नाम की कमाई करने में ही सुख है। जितना समय सुरत लगी रहती है उतना समय ही सुख है।

**साकत कूड़ कपट मह टेका।। अहनिस निंदा करेह् अनेका।।**

गुरु नानक साहब प्यार से कहते हैं, ''वे साकत हैं जो न अंदर गए, न नौं द्वार खाली किए, न परमात्मा से जुड़े। सारा दिन निन्दा-चुगली में ही अपना जन्म व्यतीत करते रहे। ऐसे साकत अनमोल जामें को खो गए।''

**बिन सिमरन आवेंह् फुन जावेंह् गरभ जोनी नरक मझारा हे।।**

अगर सिमरन नहीं करते भक्ति नहीं करते तो आते हैं जाते हैं, जन्म लेते हैं मरते हैं। एक गर्भ से छुटकारा नहीं मिलता दूसरे जन्म में फिर हथकड़ी लग जाती है। चाहे इंसान हैं चाहे पशु हैं धर्मराज के पास पेशी है।

**साकत जम की काण न चूकै।। जम का डंड न कबहूं मूकै।।**

प्यारेयो! हम सिर्फ अपने मन के कहने पर लगकर कह देते हैं कि कौन लेखा पूछने वाला है? मैंने दरवाजा बंद कर लिया है कौन देखने वाला है? वह हमारी हर अच्छी-बुरी हरकत का देखता है।

वह बिना कानों के सुनता है और इस चमड़े की आँखों के बिना देखता है। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने कहा था, ''वह हाथी की पुकार बाद में सुनता है, चींटी की पुकार पहले सुन लेता है।''

इस बार अंग्रजों ने दान-पुण्य के बारे में सवाल किया। मैंने उन्हें बहुत दिलचस्प जवाब दिया, ''देखो प्यारेयो! अगर कोई गलती से दस रुपए दान करता है तो अखबारों में निकलवाता है। भाई, पंडित को पत्री दिखाकर पूछता है बुधवार अच्छा है या वीरवार अच्छा है लेकिन पाप करते हुए किसी ने पत्री दिखाई ? बेटा बाप के साथ और बाप बेटे के साथ सलाह नहीं करता। माँ बेटी के साथ और बेटी माँ के साथ विचार नहीं करती।''

हम यहाँ पुण्य भी भोगते हैं और पाप भी भोगते हैं अगर हमारे पुण्य ही पुण्य होते तो हम स्वर्गों में बैठे होते अगर पाप ही पाप होते तो नरकों में सड़ रहे होते। हमारे पाप और पुण्यों को मिलाकर हमें इंसानी जामा मिला लेकिन मुक्ति उनकी होगी जो महात्मा की शरण में जाकर नाम लेकर कमाई करने लग गए।

***पाप-पुण्य की है यह नगरिया, सो उभरे जो सतगुरु शरणईया।***

गुरु नानक साहब कहते हैं कि यह देह पाप और पुण्यों की है। पुण्यों का ईनाम अच्छे धनी होते हैं, अच्छी बुद्धि और अच्छी सेहत होती है। पापों की सजा बीमारी, बेरोजगारी आ जाती है। आपको कोई ऐसा आदमी नहीं मिलेगा जिसने सारी जिंदगी सुख ही सुख देखे हो कभी दुख न देखा हो। उनका उद्धार होगा जो सतगुरु की शरण में जाकर नाम की कमाई करने लग गए।

आप प्यार के साथ कहते हैं कि चूहा सबसे शैतान होता है। शिकारी को धोखा देने के लिए बहुत से घर बनाता है कि बिल्ली इधर से आएगी तो मैं उधर भाग जाऊँगा आखिर मौत की बिल्ली

इतने शैतान को भी पकड़ लेती है। हम कहते हैं कि कोई यम नहीं कोई मारने वाला नहीं। वहाँ यम डंडे से पीटता है वहाँ कौन से माता-पिता हैं जो हमें बचा लेंगे।

**बाकी धरमराय की लीजै सिर अफरयो भार अफारा हे।।**

जमींदार लोगों को पता है कि हम फसल बेचकर महाजन के पास जाते हैं अगर उसका रूपया देना है तो उसे दे आते हैं अगर हमारे रूपये बढ़ जाते है तो वह हमें बाकी रूपये दे देता है। इसी तरह यम डंडो से पीटकर भी नहीं छोड़ता बाकी कर्मों के हिसाब से फिर जन्म दे देता है, आज तक यह सिलसिला खत्म नहीं हुआ।

हमारे तीन प्रकार के कर्म हैं-संचित, क्रियमान और प्रालब्ध। संचित कर्म हम ज्यादा करते है लेकिन भोगते कम हैं जो रह जाते हैं वे ब्रह्म में जमा हो जाते हैं। संचित कर्म अवतारों के भी होते हैं इसीलिए वे संसार में आते हैं। कृष्ण आए, राम आए यहाँ आकर उन्होंने कौन-सा सुख का साँस लिया। कृष्ण अभी दुनिया में आए ही नहीं थे लेकिन उनको मारने वाले पहले ही योजना बनाकर बैठे थे। कर्मों का लेखा उन्हें भी देना पड़ता है।

प्रालब्ध कर्म हम अभी भोग रहे हैं इन्हें हम कम नहीं कर सकते, बढ़ा नहीं सकते। क्रियमान वे कर्म हैं जो आज हम नए कर्म कर रहे हैं। गीता में आता हैं कि अच्छे कर्म सोने की बेड़ी हैं, बुरे कर्म लोहे की बेड़ी हैं आखिर बेड़ी है तो आपके पैरो में।

सन्त अपनी दया से ब्रह्म में संचित कर्मों के खजाने को खत्म कर देते हैं, दिन-रात सतसंग के जरिए क्रियेमान कर्मों को भी खत्म कर देते हैं है और कहते हैं पहले जो पाप हो गए आगे के लिए यहीं रूक जाओ। प्रालब्ध कर्मों के लिए सन्त कहते हैं, ''प्यारेया! ये तेरे

किए हुए कर्म हैं अब तू इन्हें हँसकर भोग चाहे रोकर भोग तुझे भोगने ही पड़ेंगे।'' गुरु नानक साहब कहते हैंः

*धर्मराय दर कागज फाटे जन नानक लेखा समझे ।*

पूर्ण गुरु सेवक के संचित कर्मों का हिसाब समाप्त करके सेवक का लेखा अपने हाथ में ले लेता है फिर सेवक पर यम का बोझ नहीं पड़ता। सेवक के कर्मों का लेन-देन गुरु के साथ है। जो सेवक गुरु का कहना मानता है, भजन-सिमरन करता है, जीवन को पवित्र बनाता है वह जन्म-मरण के बन्धनों से कट जाता है।

**बिन गुर साकत कहो को तरया, हौमें करता भवजल भरेया।।**

हम कह देते हैं कि हमें किसी गुरु-पीर की जरूरत नहीं है लेकिन जो महात्मा अंदर गए वे हमें खबरदार करते हैं कि क्या आज तक कोई गुरु के बिना पार हुआ है? जिसने समाधि के अंदर परमात्मा का ध्यान लगाया उसने यही ज्ञान करवायाः

*बिन गुरु मुक्त न पाईए भाई।*

हम हौ-हौ करते हुए आते हैं और हौ-हौ करते हुए चले जाते हैं कि मेरी कौम है, मेरा मजहब है, मैं पढ़ा-लिखा हूँ, मैं धनी हूँ तो हम नर्क में जा पड़ते हैं।

**बिन गुर पार न पावै कोई हर जपीऐ पार उतारा हे।।**

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''यहाँ मजहब, कौम, पढ़े-लिखे, अनपढ़, गरीब-अमीर का कोई सवाल नहीं। आज तक कोई गुरु के बिना न पार हुआ है न हो ही सकता है। हम आँखों से देख रहे हैं कि भगवान ने यह संसार एक समुंद्र बनाया है जिसके बीच आज हम गोते खाते फिरते हैं। हमें न इस किनारे का पता है न उस किनारे का पता है और न गहराई और न ऊँचाई का ही पता है। महात्मा इस समुंद्र की गहराई को जानते हैं। परमात्मा ने अपने

प्यारे बच्चें महात्माओं को नाम का बेड़ा देकर भेजा है। जो लोग पक्के मन से, विश्वास और श्रद्धा से इस बेड़े में सवार हो जाते हैं महात्मा उन्हें पार ले जाते हैं। जो लोग डाँवाडोल मन से इस बेड़े में सवार होते है वे भंबटों की तरह यहीं गोते खाते रहते हैं।''

**गुर की दात न मेटै कोई, जिस बख्से तिस तारे सोई।।**

गुरु शब्द-धुन के साथ जो दात देता है उसे ईश्वर, परमेश्वर कोई नहीं रोक सकता। परमात्मा का असूल है अगर पूर्ण गुरु के बिना राम की भक्ति करने जाएंगे तो राम ठुकरा देंगे। गुरु जिसे बख्श देता है उसे परमात्मा भी बख्श देता है, दरवाजा खोल देता है।

**जनम मरण दुख नेड़ न आवै मन सो प्रभ अपर अपारा हे।।**

आप प्यार से कहते हैं कि जो शब्द-नाम की कमाई करता है जन्म-मरण उसके नजदीक भी नहीं आता। वह परमात्मा के दरबार पहुँचकर परमात्मा का रूप हो जाता है।

**गुर ते भूले आवो जावो।। जनम मरो फुन पाप कमावो।।**

यह ठोस सबूत है कि हम दुखी दुनिया में क्यों बैठे हैं? क्योंकि आज तक हमें कोई पूर्ण महात्मा नहीं मिला अगर मिला है तो हमने उसका कहना नहीं माना इसलिए हम जन्म लेते हैं मरते हैं।

*भूले सिख गुरु समझाए औजड़ जान्दे मार्ग पाए।*

प्यारे बच्चों! परमात्मा अंदर है हम उसे बाहर ढूँढ़ते हैं। आप कीमती इंसानी जामे को क्यों खराब कर रहे हो इसकी कद्र करो। कुम्हार को हीरा मिल जाता है वह गधे के गले में डाल देता है; जौहरी को हीरा मिल जाता है तो वह उसे सिर पर रख लेता है। अच्छी आत्माओं को परमात्मा इंसान का जामा देता है वे परमात्मा की भक्ति करके मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

**साकत मूड़ अचेत न चेतेंह् दुख लागै ता राम पुकारा हे।।**

जब कोई कष्ट आता है, घर में कोई मौत हो जाती है, बीमारी आ जाती है उस वक्त हम परमात्मा को याद करते हैं। आपके घर में आग लग जाए उस समय आप सोचें! हम पानी लाकर आग बुझा देंगे। उस समय, जब तक आप पानी का भाव पूछेंगे तब तक आपका घर सड़ जाएगा। रिवाज यह है कि जब बीमारी आती है, दुख आता है या कोई मुकद्मा लग जाता है तब भी हम खुद भक्ति नहीं करते, ठेके पर भक्ति करवाते हैं।

*टोटे में भक्ति करे ताका नाम सपूत, माया धारी मस्करे केते ही गए ऊत।*

हम तो परमात्मा के साथ मजाक करते हैं। हम बीमार हैं और दूसरे लोगों से कहते हैं कि आप माला फेरें और हमारी जगह अरदास करें। मेरे पिताजी ने सत्तर अखंड पाठ करवाए लेकिन भोग के समय मैंने उन्हें कभी खुश नहीं देखा। मेरे पिताजी कभी उदासियों को ले आते, वे चिलम पी लेते तो उन पर नाराज़ हो जाते। कभी पंडितों को ले आते, वे किसी बात पर या पूजा के लिए अड़ जाते। कभी अकालियों को ले आते तो वे कबूतर मारकर खा लेते, शान्ति फिर नहीं। मेरे पिताजी सारी जिंदगी वैष्णव रहे।

मेरे पिताजी सुबह जपजी साहब पढ़ते और नौकरों को गालियाँ भी दिया करते थे। एक दिन मैंने पिताजी से कहा, ''परमात्मा आपका जपजी साहब मंजूर करेगा या गालियाँ मंजूर करेगा।'' मेरा पिता हमेशा कहता था, ''मैं तेरी भक्ति देखूँगा।'' मेरे गुरु सावन-कृपाल की दया थी कि उन्होंने तीन दिन पहले ही मेरे पिता को संभाल लिया। मुझे तीन दिन पहले तार देकर राजस्थान से बुलाया। मेरा पिता तीन दिन तक यही बताता रहा सफेद कपड़ो वाले दो खड़े हैं।

बहुत से प्रेमियों को पता है कि जब कण-कण में व्यापक परमात्मा कृपाल चोला छोड़ गए उस समय मैंने पांच-छह महीने कई नहरी कोठियों में लगाए थे जिसमें संगरिया भी था। संगरिया में एक महाजन ने पंडित के साथ माला फेरने का ठेका किया हुआ था। पंडित ने हाथ में माला पकड़कर उसके ऊपर गुथली चढ़ाई हुई थी। वह शाम को शराब और मीट की बातें कर रहा था। मैंने पंडित से सवाल किया कि इस माला का क्या महातम है? पंडित ने कहा कि जो कष्ट आते हैं वे दूर हो जाएंगे। मैंने पंडित से कहा कि महाजन से पैसे लेकर उसका बकरा लाकर काटोगे तो क्या बकरा सुख मनाएगा? बुल्लेशाह कहते हैं:

*इकना दे मन गमी जहानो जावांगे, इकना दे मन खुशी के गोश्त खावांगे।*

गुरु नानक साहब कहते हैं अगर कोई हमें देखकर छुरी तीखी करे! सबको ज्ञान है। जितना इंसान को जीने का हक है पशु-पक्षी को भी उतना ही हक है; परमात्मा पशु-पक्षी का भी है।

**सुख दुख पुरब जनम के कीए, सो जाणै जिन दातै दीए।।**
**किस कौ दोस देह तू प्राणी सहो अपणा किआ करारा हे।।**

सुख हमारे पिछले अच्छे कर्मों का ईनाम है। दुख हमारे पिछले बुरे कर्मों की सजा है। हमारे कर्मों का फैसला धर्मराज करता है वह जानता है कि अब क्या करना है लेकिन हम दोष करण-कारण परमात्मा को देते हैं।

प्यारे बच्चो! परमात्मा का किसी के साथ शरीका नहीं। हम जो बीजते हैं वही उगता है। हम मिर्च बीजते हैं मिर्च काटने के लिए आ जाते हैं, ईख बीजते हैं तो ईख काटने के लिए आ जाते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*दद्दा दोष न दीजे काहू दोष कर्मा अपनेया।*
*जो मैं कीता सो मैं पाया दोष ना दीजे अवर जना।।*

**हौमे ममता करदा आया।। आसा मनसा बंध चलाया।।**
**मेरी मेरी करत क्या ले चाले बिख लादे छार बिकारा हे।।**
**हर की भगति करो जन भाई।। अकथ कथो मन मनेह् समाई।।**
**उठ चलता ठाक रखो घर अपनै दुख काटे काटणहारा हे।।**
**हर गुर पूरे की ओट पराती।। गुरमुख हर लिव गुरमुख जाती।।**
**नानक राम नाम मत ऊतम हर बखसे पार उतारा हे।।**

गुरुमुखों की लिव परमात्मा के साथ लगी होती है, वे हमारी लिव भी परमात्मा के साथ लगा देते हैं इसलिए हमें दुनिया की सोहबत छोड़कर मालिक के प्यारों की सोहबत में जाना चाहिए ताकि हमारा भूला-भटका मन परमात्मा की भक्ति में लग जाए।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने हमें इस शब्द में बड़े प्यार से समझाया है, ''प्यारेयो! मेरी-मेरी करके इस संसार से क्या लेकर जाएंगे? यहाँ की कौन-सी चीज़ आपके साथ जाएगी? क्या बेटे, बेटियाँ या धन-दौलत साथ जाएगा? हम जिस शरीर में बैठे हैं यह भी किराए का पराया मकान है, इसे अग्नि या मिट्टी के सुपुर्द करके चले जाएंगे।''

इस छोटे से शब्द में गुरु नानकदेव जी ने हमें **नाम की महिमा** के बारे में समझाया है कि हम अपने जीवन को पवित्र बनाए। हमें जो मौका परमात्मा ने दिया है उससे पूरा फायदा उठाए।

*हित कर सन्त तिन्हें समझाए वे मानी नहीं माने आन।*

***

# धन्य अजायब

*गुरु प्यारी साध संगत,*

*परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 8,9,10,11,12 जनवरी 2014 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।*

*सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में नम्र निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सतसंग से लाभ उठाएं।*

***भूरा भाई आरोग्य भवन,***
*शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा)*
*कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई - 400 067*
*फोन - 098 33 00 4000*